पानी का दुरुपयोग न करें

– युवाचार्य महाश्रमण

लाडनूं, 15 मई।

युवाचार्य महाश्रमण ने प्रवचन के दौरान पानी की किल्लत का उल्लेख करते हुए कहा कि प्यासा व्यक्ति ही पानी के मूल्य को जान सकता है। जिसके पास पानी की बहुलता है। वह इसकी महत्ता नहीं आंकता। सभी को पानी के दुरुपयोग से बचना चाहिए। पानी जीवन है। पानी के बिना ज्यादा समय जीवित नहीं रहा जा सकता। रोटी से भी ज्यादा पानी की जरूरत होती है। पानी का संयम होने पर हम अपकाय की हिंसा से भी बच जाते हैं।

उन्होंने कहा कि जब पानी की इतनी समस्या है ऐसी स्थिति में पानी का अपव्यय करना विवेक की बात नहीं है। उन्होंने साधु–साध्वियों को भी और अधिक संयम करने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक पानी में सूक्ष्म जीव मानते हैं। पर जैन दर्शन उससे भी आगे पानी को ही जीव मानता है। इसी कारण सचित पानी का उपयोग मुनि नहीं कर सकता। मुनि त्यागी होता है, उसके कोई आकांक्षा नहीं होती। त्याग का आसन ऊंचा होता है।

'अणुव्रत गीत माला' सी.डी. का विमोचन

अणुव्रत न्यास दिल्ली के द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर चलाई जाने वाली अणुव्रत नैतिक गीत गायन प्रतियोगिता में सर्वोच्च प्रस्तुति देने वाले प्रतिभागी संगायकों के गीतों की सी.डी. ''अणुव्रत गीत माला'' का विमोचन युवाचार्य महाश्रमण ने किया। सी.डी. को न्यास के प्रबंध न्यासी के.एल. जैन ने युवाचार्यश्री को भेंट की। उल्लेखनीय है कि अणुव्रत नैतिक गीत गायन प्रतियोगिता पीछले 9 वर्षों से आयोजित होती है। जिसका ''अणुव्रत गीत माला'' के रूप में 10वां भाग प्रस्तुत किया गया।